

# कृषक ज्योति



भाग -1, अंक 2 जनवरी-2026

त्रैमासिक पत्रिका



# संपादक - मंडल

## डॉ. राजेंद्र प्रसाद मुख्य संपादक

editorinchief@krishakjyoti.in  
प्रोफेसर, उद्यान विज्ञान विभाग,  
कुलभास्कर आश्रम PG कॉलेज  
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

## सौम्या तिवारी संपादक

editor@krishakjyoti.in  
प्रबंधन अध्ययन विद्याशाखा उत्तर प्रदेश  
राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय,  
प्रयागराज

## डॉ. अनुराग रजनीकांत तायडे संपादक

editor@krishakjyoti.in  
सहायक प्रोफेसर कीट विज्ञान विभाग,  
शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

## डॉ. अमित कुमार संपादक

editor@krishakjyoti.in  
सहायक प्रोफेसर कृषि अर्थशास्त्र विभाग,  
SHUATS, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

## निखिल तिवारी श्रीदत्त सह-संपादक

coeditor@krishakjyoti.in  
टीचिंग एसोसिएट कृषि विस्तार एवं संचार  
विभाग, शुआट्स,  
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश



**प्रकाशक**  
**डॉ. राजेन्द्र प्रसाद**

**पत्रिका का प्रकार -** हिंदी, त्रैमासिक पत्रिका, कृषि पत्रिका

**पंजीकृत कार्यालय -** 4/4सी, म्योर रोड, इलाहाबाद, इलाहाबाद,  
उत्तर प्रदेश -211002

**Website -** [www.krishakjyoti.in](http://www.krishakjyoti.in)

**E-mail -** [editorinchief@krishakjyoti.in](mailto:editorinchief@krishakjyoti.in)

**Contact -** 9450681433



# ग्लैडियोलस की वृद्धि, उपज एवं फूल गुणवत्ता पर जैविक खादों एवं रासायनिक उर्वरकों के एकीकृत उपयोग का प्रभाव

प्रीतीराज, लवकुश पांडे एवं डॉ. शिवकांत सिंह चंदेल  
प्रो राजेंद्र सिंह (रज्जू भय्या) विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

**ग्लैडियोलस** एक प्रमुख व्यावसायिक कट-फ्लावर फसल है, जिसकी मांग देश-विदेश के पुष्प बाजारों में निरंतर बढ़ रही है। वर्तमान समय में पुष्प उत्पादन केवल अधिक फूल प्राप्त करने तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि उच्च गुणवत्ता, लंबे पुष्पदंड, आकर्षक रंग, अधिक पुष्प संख्या तथा बेहतर वास-जीवन जैसे गुणों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। परंपरागत रूप



से केवल रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से अल्पकालिक उत्पादन तो बढ़ता है, किंतु दीर्घकाल में मृदा स्वास्थ्य, पर्यावरण संतुलन एवं उत्पादन लागत पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। ऐसी स्थिति में जैविक खादों एवं रासायनिक उर्वरकों के एकीकृत उपयोग को एक टिकाऊ एवं प्रभावी पोषण प्रबंधन रणनीति के रूप में अपनाया जा रहा है। यह लेख ग्लैडियोलस की वृद्धि, उपज एवं फूल गुणवत्ता पर जैविक खादों और रासायनिक उर्वरकों के संयुक्त प्रभाव का सैद्धांतिक, व्यावहारिक एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जो किसानों, विद्यार्थियों एवं पुष्प वैज्ञानिकों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

भारत में पुष्प उत्पादन कृषि का एक उभरता हुआ और लाभकारी क्षेत्र है। बढ़ती शहरीकरण प्रवृत्ति, सामाजिक आयोजनों, विवाह समारोहों एवं निर्यात मांग के कारण कट-फ्लावर फसलों का महत्व निरंतर बढ़ रहा है। इन फसलों में ग्लैडियोलस का स्थान अत्यंत

महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह कम समय में अधिक आर्थिक लाभ देने वाली फसल मानी जाती है।

हाल के वर्षों में यह स्पष्ट हो गया है कि केवल अधिक मात्रा में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग दीर्घकालिक समाधान नहीं है। इससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति में गिरावट, सूक्ष्मजीवी गतिविधियों में कमी तथा पर्यावरण प्रदूषण जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इसके विपरीत, केवल जैविक खादों के प्रयोग से त्वरित पोषण आपूर्ति संभव नहीं हो पाती। इसलिए जैविक खादों एवं रासायनिक उर्वरकों का एकीकृत उपयोग एक संतुलित, टिकाऊ एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के रूप में उभरकर सामने आया है।

### **ग्लैडियोलस फसल का संक्षिप्त परिचय**

ग्लैडियोलस एक कंद वर्गीय पुष्पीय पौधा है, जो मुख्यतः शीतोष्ण एवं उपोष्ण जलवायु में उगाया जाता है। यह फसल अच्छी जल-निकास वाली, कार्बनिक पदार्थों से युक्त दोमट मिट्टी में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करती है।

### **ग्लैडियोलस की व्यावसायिक सफलता निम्नलिखित कारकों पर निर्भर करती है:**

- स्वस्थ एवं समान अंकुरण
- तीव्र एवं संतुलित शाकीय वृद्धि
- लंबे, सीधे एवं मजबूत पुष्पदंड
- अधिक पुष्प संख्या
- फूलों का बड़ा आकार, चमकीला रंग एवं ताजगी

इन सभी गुणों को प्राप्त करने के लिए पौधों को संतुलित पोषण उपलब्ध कराना अत्यंत आवश्यक है।

जैविक खादों का महत्व

जैविक खादें पौधों को पोषण प्रदान करने के साथ-साथ मृदा के भौतिक, रासायनिक एवं जैविक गुणों में सुधार करती हैं। गोबर की खाद, कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट एवं हरी खाद प्रमुख जैविक खादों में शामिल हैं।

### **मृदा स्वास्थ्य पर प्रभाव**

जैविक खाद मृदा की संरचना एवं जल धारण क्षमता बढ़ाती हैं तथा मृदा में लाभकारी सूक्ष्मजीवों की सक्रियता को प्रोत्साहित करती हैं। इससे जड़ों का विकास बेहतर होता है और पौधे पोषक तत्वों को अधिक प्रभावी रूप से अवशोषित कर पाते हैं।

ग्लैडियोलस की वृद्धि पर प्रभाव

जैविक खादों के प्रयोग से पौधों में संतुलित शाकीय वृद्धि होती है। पत्तियाँ अधिक हरित एवं स्वस्थ बनती हैं, जिससे प्रकाश संश्लेषण की क्षमता बढ़ती है और पौधे पुष्पन के लिए अधिक ऊर्जा संचित कर पाते हैं।

### **रासायनिक उर्वरकों की भूमिका**

रासायनिक उर्वरक जैसे यूरिया, डीएपी एवं म्यूरेट ऑफ पोटाश पौधों को शीघ्र उपलब्ध पोषण उपलब्ध कराते हैं। ग्लैडियोलस में ये उर्वरक प्रारंभिक वृद्धि, पुष्पदंड विकास एवं फूल निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

### **त्वरित पोषण आपूर्ति**

रासायनिक उर्वरकों के माध्यम से पौधों को आवश्यक पोषक तत्व तुरंत उपलब्ध हो जाते हैं, जिससे शाकीय वृद्धि तीव्र होती है और पुष्पन समय पर होता है।

### सीमाएं

हालाँकि, केवल रासायनिक उर्वरकों के लगातार प्रयोग से मृदा में कार्बनिक पदार्थ की कमी, सूक्ष्मजीवी गतिविधियों में गिरावट एवं पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

### एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन की अवधारणा

एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन का तात्पर्य जैविक खादों एवं रासायनिक उर्वरकों का संतुलित एवं वैज्ञानिक ढंग से उपयोग करना है, जिससे पौधों को निरंतर पोषण उपलब्ध हो और मृदा स्वास्थ्य भी बना रहे।

ग्लैडियोलस की वृद्धि पर एकीकृत उपयोग का प्रभाव जैविक खादों एवं रासायनिक उर्वरकों के संयुक्त प्रयोग से ग्लैडियोलस पौधों की ऊँचाई, पत्तियों की संख्या एवं हरित द्रव्य की मात्रा में संतुलित वृद्धि में सहायक है। जैविक खादें मृदा को जीवंत बनाये रखने जबकि रासायनिक उर्वरक त्वरित पोषण प्रदान करने में सहायक है साथ ही साथ पौधों के वृद्धि व विकास में उपयोग हैं।

### उपज एवं फूल गुणवत्ता पर प्रभाव

एकीकृत पोषण प्रबंधन से पुष्पदंड की लंबाई एवं मजबूती में सुधार होता है। फूलों का आकार अधिक चमकीला एवं पुष्प संख्या अधिक होती है। इसके अतिरिक्त, कट-फ्लावर की वास-जीवन में भी वृद्धि होती है, जो बाजार मूल्य बढ़ाने में सहायक है।

### वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपयोगिता

आज के समय में टिकाऊ एवं पर्यावरण-अनुकूल खेती की आवश्यकता को देखते हुए एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन का महत्व और अधिक बढ़ गया है। यह पद्धति न केवल उत्पादन गुणवत्ता सुधारती है, बल्कि किसानों की लागत घटाकर उनकी आय में वृद्धि भी करती है।

### निष्कर्ष

ग्लैडियोलस की सफल एवं गुणवत्तापूर्ण खेती के लिए जैविक खादों एवं रासायनिक उर्वरकों का एकीकृत उपयोग अत्यंत आवश्यक है। यह रणनीति पौधों की वृद्धि, उपज एवं फूल गुणवत्ता में सुधार के साथ-साथ मृदा स्वास्थ्य संरक्षण एवं टिकाऊ पुष्प उत्पादन को भी सुनिश्चित करती है। भविष्य में ग्लैडियोलस उत्पादन प्रणालियों में इस संतुलित पोषण प्रबंधन की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण होती जाएगी।